



संस्कृत एवं प्राकृत भाषाएँ विभाग

मानविकी विद्याशाखा

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020

के अन्तर्गत संचालित पाठ्यक्रम बी.ए.-23 के पंचम सेमेस्टर

बी.ए.एस.एल. (एन) डी-331

BA- 23

BASL (N)-D-331 के लिए

शोध प्रबन्ध कार्य की रूपरेखा एवं शोध कार्य हेतु दिशानिर्देश

(Outline of Research Dissertation work and guidelines for Research Dissertation work for BASL (N)-D-331, fifth semester of BA-23 course conducted under National Education Policy-2020)

रिसर्च प्रोजेक्ट दिशानिर्देश तैयार करने वाली कमेटी

Committee for preparing research project guidelines

क्र.सं.	विशेषज्ञों के नाम एवं पदनाम
1.	निदेशक, मानविकी विद्याशाखा
2.	डॉ० नीरज कुमार जोशी, असिस्टेंट प्रोफेसर (ए.सी.), समन्वयक, संस्कृत
3.	श्री राहुल पन्त, असिस्टेंट प्रोफेसर (ए.सी.), संस्कृत
4.	डॉ० सुधीर प्रसाद नौटियाल, असिस्टेंट प्रोफेसर (ए.सी.), संस्कृत
5.	डॉ० कान्ता प्रसाद चमोली, असिस्टेंट प्रोफेसर (ए.सी.), संस्कृत
6.	डॉ० विवेक ममगाई, असिस्टेंट प्रोफेसर (ए.सी.), संस्कृत

रिसर्च प्रोजेक्ट के सामान्य नियम और निर्देश

(जुलाई-दिसम्बर, 2025)

General Rules and regulations of the research project

(July-December, 2025)

- बी.ए.एस.एल.पंचम सेमेस्टर में शिक्षार्थियों को शोध प्रबन्ध प्रस्ताव (Dissertation Proposal) एवं शोध प्रबन्ध कार्य (Dissertation) करने हेतु विश्वविद्यालय के संस्कृत विषय के प्राध्यापक से मार्गदर्शन प्राप्त करना होगा। अतः शिक्षार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे संस्कृत के शैक्षिक परामर्शदाता से सम्पर्क कर मार्गदर्शन प्राप्त करें।
- बी.ए.एस.एल. पंचम सेमेस्टर के जिन शिक्षार्थियों ने शोध प्रबन्ध कार्य को लिया है वह जुलाई-दिसम्बर, 2025 सत्र के अंतर्गत अध्ययनरत पंचम सेमेस्टर के शिक्षार्थियों को नीचे दिये गए किसी एक विषय पर मौलिक रिसर्च प्रोजेक्ट लिखकर 31 दिसम्बर, 2025 तक विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग, मानविकी विद्याशाखा में विद्याशाखा में स्वयं या रजिस्टर्ड डाक द्वारा जमा कराना होगा।
- सर्वप्रथम शिक्षार्थियों को एक शोध प्रबन्ध प्रस्ताव तैयार कर विश्वविद्यालय को निम्नलिखित मेल आईडी० पर प्रेषित करना होगा **dos@uou.ac.in**
- विश्वविद्यालय के संस्कृत एवं प्राकृत भाषाएं विभाग द्वारा शोध प्रबन्ध प्रस्ताव का अवलोकन कर आवश्यक दिशानिर्देश एवं सुझाव, शोध प्रबन्ध प्रस्ताव उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय को प्रेषित करने की अंतिम तिथि के एक सप्ताह पश्चात् विश्वविद्यालय की वेब साइट पर अपलोड कर दिए जाएंगे।
- जिन शिक्षार्थियों का शोध प्रबन्ध प्रस्ताव विश्वविद्यालय द्वारा अस्वीकृत कर दिया जायेगा, उन विद्यार्थियों को अपना शोध प्रबन्ध प्रस्ताव आवश्यक सुधार के साथ एक सप्ताह के भीतर पुनः विश्वविद्यालय (only soft copy) को प्रेषित करना होगा।
- कोई भी डिजिटेशन प्रस्ताव, जो विश्वविद्यालय द्वारा अस्वीकृत कर दिया गया हो उसका डिजिटेशन, डिजिटेशन प्रस्ताव की स्वीकृति के बिना किसी भी परिस्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा।
- विश्वविद्यालय द्वारा शोध प्रबन्ध प्रस्ताव की स्वीकृति की पुष्टि हो जाने पर ही अपना शोध कार्य प्रारंभ करें।
- शिक्षार्थियों को शोध प्रबन्ध प्रस्ताव के साथ अपने पर्यवेक्षक (Facilitator) का एक बायो-डेटा अनिवार्य रूप से संलग्न करना होगा, इसके बिना किसी भी विद्यार्थी का शोध प्रारूप विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकार नहीं किया जायेगा।
- विश्वविद्यालय को भेजा गया शोध प्रबन्ध विद्यार्थियों को वापस नहीं किया जायेगा।
- शिक्षार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपना शोध अध्ययन स्वयं करें। नकल किया गया कार्य स्वीकार नहीं किया जायेगा।

- यदि विश्वविद्यालय द्वारा किन्हीं दो शिक्षार्थियों के शोध प्रबन्ध का विषय एवं क्षेत्र समान पाया गया अथवा अनुवाद करके दूसरे विद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत किया गया तो उनका शोध प्रबन्ध निरस्त कर दिया जायेगा।
- डिजिटेशन कार्य में मार्गदर्शन हेतु कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा।
- आपका डिजिटेशन कार्य संस्कृत अथवा हिंदी भाषा में डबल स्पेस, फॉन्ट साईज-14 में ए- फोर पेपर- साईज में होना चाहिए।
- डिजिटेशन कार्य टाईप होने के पश्चात आपके द्वारा पुनः टाइपिंग अशुद्धियों को देखकर उनको शुद्ध करा लिया जाए। शोध प्रबन्ध कार्य में पृष्ठ संख्या अवश्य अंकित करें।
- डिजिटेशन कार्य की बाइंडिंग हार्ड कवर पेज के साथ होनी चाहिए।
- डिजिटेशन के प्रथम पन्ने पर शिक्षार्थी का नाम, एनरोलमेंट न० व स्टडी सेंटर का पूरा पता आदि उल्लिखित होना चाहिए एवं पर्यवेक्षक (Facilitator) का पूरा नाम भी लिखा होना चाहिए। जिसका प्रारूप इस निर्देशिका के अंत में संलग्न है।
- डिजिटेशन कार्य के साथ शिक्षार्थियों को इस पुस्तिका के अन्तिम भाग में प्रारूप 1 से 3 भरकर संलग्न करना अत्यंत आवश्यक है।
- डिजिटेशन कार्य प्राथमिक तथ्यों /द्वितीयक स्रोतों पर आधारित होना चाहिए।
- शोध विषय से सम्बन्धित साहित्य का अवलोकन व अध्ययन अवश्य करें, इससे आपकी विषय सम्बन्धी जानकारी में वृद्धि होने के साथ-साथ आपका शोध कार्य बेहतर होगा।
- शिक्षार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने डिजिटेशन की तीन प्रतियां तैयार करें जिसमें से एक विश्वविद्यालय हेतु, दूसरी शोध निर्देशक हेतु एवं तीसरी प्रति स्वयं उपयोग के लिए होगी।
- शीर्षक-उपशीर्षक के लिए 16-18 तक कोकिला (यूनिकोड) फॉन्ट साइज इस्तेमाल किया जा सकता है जबकि मुख्य सामग्री का फॉन्ट साइज अंग्रेजी में 12 होगा एवं हिंदी में 16 तक रख सकते हैं। इससे कम या ज्यादा फॉन्ट होने पर अध्ययन अस्वीकार किया जा सकता है।
- डिजिटेशन कार्य में न्यूनतम 100 पृष्ठ होने अनिवार्य हैं जिसकी हार्ड बाइंडिंग होनी आवश्यक है।
- बिना संदर्भ-सूची के जमा किये गये अध्ययन कार्य किसी भी दशा में स्वीकार्य नहीं होगा।
- डिजिटेशन कार्य के प्रस्तावित/रूपरेखा को अपने शोध निर्देशक की स्वीकृति के उपरांत विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में अंतिम स्वीकृति हेतु शोध निर्देशक एवं स्वयं के मूल हस्तारक्षित प्रति स्वयं या पंजीकृत डॉक के माध्यम से विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत्त निश्चित तिथि तक प्रेषित किया जाना अति आवश्यक होगा अन्यथा की दशा में शोध प्रस्ताव/रूपरेखा को स्वीकार नहीं माना जायेगा जिसके लिए स्वयं शिक्षार्थी जिम्मेदार होगा।
- डिजिटेशन कराने के लिए वहीं शोध निर्देशक योग्य होंगे जिनके द्वारा पी-एच.डी. की उपाधि अर्जित की गयी हो और किसी विश्वविद्यालय या महाविद्यालय में स्थायी, अस्थायी एवं संविदा शिक्षक या विश्वविद्यालय/महाविद्यालयों में उनका पदनाम जिस भी नाम से जाना जाता हो, के रूप से कार्यरत हो। इसके साथ ही उनको शोध कार्य/लघुशोध/रिसर्च प्रोजेक्ट निर्देशन का न्यूनतम 2 वर्ष का अनुभव हो। बशर्ते न्यूनतम 2 वर्ष के निर्देशन के अनुभव की बाध्यता केवल उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय में कार्यरत संस्कृत के संकाय सदस्यों पर लागू नहीं होगा।
- डिजिटेशन हेतु जिन शोध निर्देशकों को चयनित किया जायेगा उनके नाम माननीय कुलपति महोदय के अनुमोदन के पश्चात् संस्कृत विभाग द्वारा सम्बन्धित शोध निर्देशक को ईमेल के माध्यम से या विश्वविद्यालय की वेबसाइट के माध्यम से अवगत कराया जायेगा।
- डिजिटेशन कुल 100 अंकों का होगा जिसमें 70 अंक डिजिटेशन हेतु निर्धारित हैं और 30 अंकों की मौखिक परीक्षा होगी। शिक्षार्थियों को डिजिटेशन कार्य उत्तीर्ण होने के लिए न्यूनतम 50 प्रतिशत अंक अर्जित करने अनिवार्य होंगे तभी वह मौखिक परीक्षा हेतु अर्ह माना जायेगा। जो शिक्षार्थी प्रोजेक्ट कार्य 50 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करता है उसको अनर्ह माना जायेगा अतः ऐसे शिक्षार्थियों को आगामी सत्र में बैक परीक्षा फार्म भरके पुनः रिसर्च प्रोजेक्ट कार्य करना होगा।
- डिजिटेशन में साहित्यिक चोरी हेतु न्यूनतम 10 प्रतिशत का मानदण्डक यूजीसी द्वारा निर्धारित किया गया है वही मान्य होगा। डिजिटेशन को किसी विश्वसनीय साहित्यिक चोरी जांच सॉफ्टवेयर के माध्यम से जांच कराके उसका प्रमाण पत्र प्रोजेक्ट में संलग्न करना अनिवार्य होगा। 10 प्रतिशत से अधिक प्लेगरिज्म होने पर डिजिटेशन स्वीकार नहीं किया जायेगा।

- डिजिटेशन में मार्गदर्शन कराने वाले शोध निर्देशकों को विश्वविद्यालय नियमानुसार प्रति शिक्षार्थी के आधार पर भुगतान किया जायेगा।
- डिजिटेशन के मूल्यांकन हेतु परीक्षकों को भी विश्वविद्यालय के नियमानुसार भुगतान किये जाने का प्रावधान निहित होगा।
- प्रारूप में दिये गये विषयों से अतिरिक्त प्रत्येक सत्र में डिजिटेशन के लिए दिये जाने वाले शोध शीर्षकों में विभागीय स्तर पर भी परिवर्तन किया जा सकता है।

आवश्यक तिथियाँ

- डिजिटेशन से सम्बंधित आवश्यक तिथियाँ विश्वविद्यालय की वेब साईट पर उपलब्ध होंगी ।
- शिक्षार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपना शोध प्रबंध प्रस्ताव उक्त मेल आईडी dos@uou.ac.in पर प्रेषित करें ।
- नियत तिथि के पश्चात प्रेषित किये गए शोध प्रबंध कार्य किसी भी दशा में विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकार नहीं किये जाएँगे ।
- नियत तिथि के पश्चात भेजे गए शोध प्रबंध कार्य अगले सत्र में बैक पेपर परीक्षा के माध्यम से स्वीकार किये जाएँगे ।



प्रस्तावना (Introduction)

संस्कृत के शिक्षार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि उन्होंने संस्कृत पाठ्यक्रम के अन्तर्गत जो ज्ञान प्राप्त किया है उसका उपयोग करके क्षेत्र-कार्य और ऐतिहासिक गवेषणा की विधियों से भी अवगत हो सकें। हमारा मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थी की संस्कृत में दिलचस्पी पैदा करना है, संस्कृत के अन्वेषण का अभ्यास कैसे किया जाता है, इसके संदर्भ में शिक्षार्थी की प्रवृत्ति को जागरूक करना है। विशेष रूप से हम शिक्षार्थियों से यह आशा करते हैं कि वे अपने स्थानीय स्तर पर संस्कृत के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए किये गये कार्यों का भी अवलोकन करने हुए कालान्तर में हो रहे कार्यों को कर उस जगह को भरने का प्रयास करें जो मुख्यधारा के ऐतिहासिक विमर्श में अक्सर अनदेखी रह जाती हैं, जबकि ये सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक संरचनाओं, और सामूहिक स्मृति को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यह मॉड्यूल स्नातक छात्रों को उनके आस-पास के स्थानों में, अपने मण्डल में, अपने राज्य में, अपने देश में — संस्कृत का अन्वेषण और दस्तावेजीकरण करने के लिए प्रेरित करता है। इसके साथ ही यह डिजिटेशन कार्य भारतीय ज्ञान परम्परा के विभिन्न पहलुओं पर भी रोचक कार्य करने की आशा करता है। जिसमें प्राचीन भारत ने दर्शन, भाषा विज्ञान, अनुष्ठान, व्याकरण, खगोल विज्ञान, अर्थशास्त्र, सांख्य सिद्धांत, तर्क, जीवन विज्ञान, आयुर्वेद, ज्योतिष एवं संगीत जैसे विभिन्न मानव कल्याणकारी क्षेत्र तथा पारम्परिक तकनीकों के सम्बंध में डिजिटेशन कार्य करने को हम प्राथमिकता दिए जाने की आशा करते हैं। यह छात्रों को विभिन्न स्तरों पर संस्कृत की कार्यप्रणाली को समझने में मदद करता है, साथ ही जीवंत अनुभवों को साहित्यिक साक्ष्य के रूप में महत्व देने की प्रेरणा देता है। पारंपरिक दृष्टिकोण को अवलोकित कर नूतन ज्ञान की विधियों को अपनाने पर जोर देता है, जो कि हमारे नये शोध अनुसंधान को भी और दैनिक जीवन को प्राथमिकता देती हैं। यह कार्य अनुसंधान के अभिनव तरीकों, अंतर्विषयक दृष्टिकोणों और सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से छात्रों में आलोचनात्मक सोच, कौशल और संस्कृत के प्रति एक समावेशी दृष्टिकोण विकसित करने का लक्ष्य रखता है।

अतः संस्कृत के शिक्षार्थियों में शोध दक्षता उत्पन्न करने हेतु उन्हें शोध कार्य करना एक आवश्यक क्रियाकलाप है। जिसमें एक शीर्षक का चुनाव कर अपना शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करना होता है। शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करने के लिए सर्वप्रथम एक शोध प्रबंध प्रस्ताव (Dissertation Proposal) का निर्माण करना होता है। आपका शोध प्रबंध प्रस्ताव विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकार कर लिये जाने के पश्चात शोध प्रबन्ध कार्य को पूर्ण करना होगा। शोध प्रबन्ध प्रस्ताव एवं शोध प्रबन्ध कार्य सम्पन्न करने हेतु आपको उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता होगी। डिजिटेशन-प्रस्ताव एवं डिजिटेशन करने हेतु अपने शैक्षिक परामर्शदाता (Academic Facilitator) से सम्पर्क करें तथा उनसे शोध प्रबंध कार्य करने हेतु पर्यवेक्षक के चयन में सहयोग मांगें। यही सहयोगी जो आपको डिजिटेशन कार्य को पूर्ण करने में सहयोग प्रदान करेंगे आपके फैसिलिटेटर कहलायेंगे। आपके फैसिलिटेटर ही आपको शोध कार्य पूर्ण करने में सहायता प्रदान करेंगे, अतः अपने फैसिलिटेटर के सम्पर्क में रहें तथा उनके द्वारा दिये गये सुझावों से लाभान्वित हों।

प्रयोजन (Purpose)

डिजिटेशन को संस्कृत के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किए जाने का मर्म यह है कि शिक्षार्थियों को संस्कृत की संकल्पनाओं एवं इसके विभिन्न पहलुओं से अवगत कराया जा सके। जिससे आप संस्कृत के विभिन्न आयामों से परिचित हो सकेंगे। यहाँ पर आपकी सुविधा हेतु यह कहना प्रासंगिक होगा कि आप जिस विषय में भविष्य में विशेषज्ञता हासिल करना चाहते हैं, उस विषय का चयन कर सकते हैं। संस्कृत के अपने पाठ्यक्रम में आप संस्कृत के विभिन्न विषयों एवं क्षेत्रों से परिचित अवश्य हो गये होंगे, जो संस्कृत की पृष्ठभूमि से सम्बन्धित है। आज के परिप्रेक्ष्य में आप संस्कृत के वर्तमान में प्रासंगिक मुद्दों पर भी शोध कर सकते हैं।

उद्देश्य (Objectives) शोध प्रबन्ध के मुख्य उद्देश्य

(Main Objectives of Dissertation)

1. ज्ञान की सीमा का विस्तार करना:

- संस्कृत साहित्य और संस्कृति के विभिन्न पक्षों पर नया ज्ञान उत्पन्न करना,
- पूर्व से अज्ञात तथ्यों, विचारों, या व्याख्याओं को खोजना और प्रस्तुत करना,
- संस्कृत साहित्य और दर्शन के सिद्धांतों को विकसित करना या उनकी पुनः व्याख्या करना,
- संस्कृत साहित्य या संस्कृति से संबंधित समस्याओं की पहचान करना और उनका समाधान प्रस्तुत करना,
- संस्कृत साहित्य के माध्यम से भारतीय संस्कृति और मूल्यों की गहरी समझ प्रदान करना। व्यापक ऐतिहासिक प्रसंगों के महत्व को समझना।

- भारतीय ज्ञान परम्परा के व्यापक अनुसंधान से स्थानीय या क्षेत्रीय संस्कृत को जोड़ना।
- 2. **वैज्ञानिक पद्धति का निर्धारण और प्रशिक्षण करना:**
 - मौलिक स्रोतों जैसे मौखिक साक्ष्यों, पाण्डुलिपियों, और दृश्य सामग्रियों के उपयोग में छात्रों को प्रशिक्षित करना।
 - ऐतिहासिक अनुसंधान के लिए डिजिटल और गैर-डिजिटल उपकरणों की जानकारी और उसमें प्रवीणता हासिल करना।
- 3. **आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करना:**
 - स्मृति, ऐतिहासिक कथानकों में पूर्वाग्रह की भूमिका का विश्लेषण करना।
 - यह समझना कि ऐतिहासिक निरूपण जटिल होता है, और यह कौन तय करता है और क्यों।
- 4. **नवाचार को बढ़ावा देना:**
 - संस्कृत भाषा को प्रस्तुत करने के रचनात्मक तरीकों को प्रोत्साहित करना, जैसे कि डिजिटल कहानियाँ, नाट्यमंचन, और मल्टीमीडिया डिज़िटेशन।
 - संस्कृत का अंतर्विषयक सम्बंध के विषय में पता लगाना।

शोध प्रबन्ध के विशेष उद्देश्य (Special Objectives of Dissertation)

- शोध समस्या का निर्माण करना सीखना।
- मौलिक एवं उच्चतम नवीन तथ्यों का उद्घाटन
- किसी निर्माण को निश्चित करना
- मानवीय चिंतन की प्रवृत्ति का विकास और परिष्कार
- अज्ञात सत्य की खोज करना
- भौतिक और मानसिक कल्याण
- विशिष्ट ज्ञानप्राप्ति और ज्ञानक्षेत्र की सीमा का विस्तार
- विश्रृंखलित तत्वों का संयोजन
- समस्याओं का समाधान
- अनुपलब्ध तथ्यों का अन्वेषण
- उपलब्ध तथ्यों और सिद्धांतों की पुनःस्थापना
- मौलिकता का प्रतिपादन वैज्ञानिक पद्धति का अनुसरण।
- गहन साहित्य सर्वेक्षण द्वारा शोध हेतु उपयुक्त विषय का चुनाव करना।
- परिकल्पना का निर्माण करने की प्रक्रिया से अवगत होना।
- शोध-प्रारूप निर्माण की प्रक्रिया को जानना।
- निदर्शन प्रारूप निर्धारण को समझना।
- आँकड़ा संकलन की विधि से अवगत होना।
- प्रोजेक्ट का सम्पादन करना सीखना।
- आँकड़ों का विश्लेषण करने का ज्ञान अर्जित करना।
- परिकल्पनाओं का परीक्षण सीखना।

- सामान्यीकरण और विवेचन और
- रिपोर्ट तैयार करना या परिणामों का प्रस्तुतीकरण यानि निष्कर्षों का औपचारिक लेखन लिखने की कला को सीखना।

डिजिटेशन कार्य से आशय

डिजिटेशन एक अप्रत्यक्ष/परोक्ष रूप में, एवं सक्रिय कार्य करने की एक विधि है। जो संगठित रूप से एक विषय के बारे में क्रमबद्ध, विस्तृत एवं नयी जानकारी प्राप्त करने के लिए सहायता प्रदान करती है। संस्कृत में डिजिटेशन कार्य अध्ययन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है क्योंकि यह व्याख्यान और पाठ्यपुस्तक-आधारित अध्ययन के पारंपरिक तरीकों से परे जाकर विषय में सक्रिय रूप से जुड़ने का अवसर प्रदान करता है। यह छात्रों को महत्वपूर्ण कौशल विकसित करने, ऐतिहासिक अध्ययन को वास्तविक जीवन के संदर्भों से जोड़ने, और विषय के साथ गहरे स्तर पर जुड़ने में मदद करता है। यहाँ संस्कृत में डिजिटेशन कार्य के महत्व को विस्तार से समझाया गया है:

1. सक्रिय शिक्षा और आलोचनात्मक सोच

- **व्यावहारिक अनुभव:** डिजिटेशन कार्य छात्रों को ऐतिहासिक अनुसंधान प्रक्रिया में संलग्न करता है, जिसमें स्रोतों का पता लगाना, डेटा का विश्लेषण करना और साक्ष्यों की व्याख्या करना शामिल है।
- **सर्व-स्वीकृत आख्यानो पर सवाल उठाना:** छात्र स्थापित ऐतिहासिक दृष्टान्तों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना सीखते हैं, पक्षपात या पूर्वाग्रह की पहचान करते हैं।
- **समस्या समाधान कौशल:** वास्तविक चुनौतियों पर विचार के दौरान छात्र समस्याओं का समाधान करना और साक्ष्य के आधार पर तार्किक निष्कर्ष निकालना सीखते हैं।

2. सिद्धांत को व्यावहारिकता से जोड़ना

- **ऐतिहासिक विधियों का उपयोग:** डिजिटेशन कार्य छात्रों को कक्षा में सीखे गए अवधारणाओं और सिद्धांतों, व्यावहारिक अनुसंधान में लागू करने में मदद करता है।
- **संस्कृत की प्रासंगिकता समझना:** संस्कृत भाषा का भारतीय संस्कृति और साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। यह न केवल कई आधुनिक भारतीय भाषाओं की जननी है, बल्कि धार्मिक, दार्शनिक और वैज्ञानिक ग्रंथों का भंडार भी है। संस्कृत का अध्ययन आज भी ज्ञान-विज्ञान, भाषा कौशल और तार्किक सोच को विकसित करने में सहायक है, साथ ही यह भारतीय संस्कृति और एकता को भी बढ़ावा देती है।

3. अनुसंधान कौशल का विकास

- **मूल स्रोतों से जुड़ाव:** छात्र प्राथमिक स्रोतों के साथ काम करना सीखते हैं, जिससे उनकी अनुसंधान क्षमताओं में सुधार होता है।
- **कार्यप्रणाली में प्रशिक्षण:** डिजिटेशन कार्य छात्रों को ऐतिहासिक तरीकों जैसे तुलना, कालक्रम, और सन्दर्भीकरण/सामान्यीकरण में प्रशिक्षित करता है।
- **डिजिटल साक्षरता:** संस्कृत में अनुसंधान कौशल का विकास एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसमें भाषा, साहित्य, व्याकरण, और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं का गहन अध्ययन शामिल है। इसके लिए Structured learning, practical application, और scholarly engagement का संयोजन आवश्यक है।
- **अनुसंधानात्मक विधियों :** संस्कृत साहित्य में अनुसंधान के लिए उपयुक्त विधियों का ज्ञान होना चाहिए, जैसे कि textual criticism, comparative linguistics, और historical linguistics.

4. संचार कौशल को बढ़ावा देना

- **प्रस्तुति और लेखन:** चाहे निबंधों, प्रदर्शनियों, या मल्टीमीडिया आउटपुट के माध्यम से, छात्र जटिल विचारों को स्पष्ट और आकर्षक तरीके से प्रस्तुत करना सीखते हैं।
- **सहयोगात्मक कार्य:** समूह डिजिटेशन टीमवर्क और संचार कौशल को बढ़ावा देती हैं क्योंकि छात्र सामूहिक अनुसंधान उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए मिलकर काम करते हैं।

- **सामुदायिक जुड़ाव:** संस्कृत में संचार कौशल, जिसे "संस्कृत-संचार-कौशलम्" कहा जा सकता है, इसमें सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना शामिल है, साथ ही उचित उच्चारण, व्याकरण और शब्दावली का उपयोग करना भी शामिल है।

5. रचनात्मकता और नवाचार को प्रोत्साहित करना

- **रचनात्मक प्रस्तुतियाँ:** संस्कृत डिजिटेशन अक्सर अभिनव प्रस्तुतियों, जैसे डॉक्यूमेंट्री, डिजिटल कहानी कहने, या संग्रहालय प्रदर्शनियों को प्रोत्साहित करती हैं, जिससे छात्रों की रचनात्मकता को बढ़ावा मिलता है। संस्कृत भाषा में रचनात्मकता और नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए कई तरीके हैं, जैसे कि डिजिटल माध्यमों का उपयोग, नवीन शिक्षण विधियों का विकास, और संस्कृत साहित्य में नए विषयों को शामिल करना। रचनात्मकता और नवाचार, संस्कृत भाषा को अधिक आकर्षक और प्रासंगिक बनाने में मदद कर सकते हैं।
- **अंतर्विषयक संबंध:** छात्र अपने विषय विश्लेषण को समृद्ध करने के लिए दर्शन, ज्योतिष, संगीत या कला जैसे अन्य विषयों के दृष्टिकोणों को शामिल कर सकते हैं। समकालीन विषयों पर संस्कृत में लेखन को प्रोत्साहित करना। विभिन्न संस्कृत ग्रंथों का आधुनिक संदर्भों में अनुवाद और व्याख्या करना। संस्कृत साहित्य में नवाचार को बढ़ावा देने के लिए रचनात्मक लेखन प्रतियोगिताएं आयोजित कर सकते हैं।

6. भविष्य के करियर के लिए तैयारी करना

- **कौशल विकास:** अनुसंधान, आलोचनात्मक सोच, संचार, और डिजिटल साक्षरता के कौशल जो संस्कृत-डिजिटेशन के माध्यम से विकसित होते हैं, अकादमिक, पत्रकारिता, सार्वजनिक नीति, शिक्षक, अनुवादक, पुरोहित, ज्योतिषी, और धार्मिक संस्थानों और अन्य क्षेत्रों में करियर के लिए मूल्यवान हैं।
- **पोर्टफोलियो निर्माण:** डिजिटेशन कार्य ठोस आउटपुट तैयार करता है, जिसे छात्र नौकरियों, छात्रवृत्तियों, या स्नातक कार्यक्रमों के लिए आवेदन में प्रस्तुत कर सकते हैं।

7. संस्कृत को व्यक्तिगत और प्रासंगिक बनाना

- संस्कृत को व्यक्तिगत और प्रासंगिक बनाने के लिए, इसे रोजमर्रा की जिंदगी में शामिल करना, आधुनिक संदर्भों से जोड़ना, और इसके लाभों को उजागर करना आवश्यक है।
- **भूतकाल और वर्तमान को जोड़ना:** छात्र यह समझने में सक्षम होते हैं कि ऐतिहासिक घटनाएँ वर्तमान सामाजिक, राजनीतिक, और सांस्कृतिक संदर्भों को कैसे आकार देती हैं।
- **संस्कृत के आधुनिक उपयोगों को उजागर करना:** संस्कृत को कंप्यूटर विज्ञान, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, और अन्य आधुनिक क्षेत्रों में उपयोग के लिए प्रासंगिक बताया गया है। इन उपयोगों को उजागर करना।
- **संस्कृत के नैतिक और दार्शनिक विचारों को वर्तमान संदर्भ में लागू करना:** संस्कृत साहित्य में नैतिकता, दर्शन, और सामाजिक न्याय पर बहुत कुछ लिखा गया है। इन विचारों को आज के समाज में प्रासंगिक बनाने के तरीकों पर चर्चा करना।
- **संस्कृत को भारतीय संस्कृति और विरासत से जोड़ें रखना:** संस्कृत भारत की संस्कृति और विरासत का एक अभिन्न अंग है। संस्कृत को भारतीय संस्कृति के अन्य पहलुओं से जोड़कर, इसे अधिक प्रासंगिक बनाया जा सकता है।
- **संस्कृत को एक जीवंत भाषा के रूप में बढ़ावा देना:** संस्कृत को केवल एक शास्त्रीय भाषा के रूप में नहीं, बल्कि एक जीवंत भाषा के रूप में बढ़ावा देना। संस्कृत का व्याकरण और शब्दावली तार्किक सोच और समस्या-समाधान कौशल को विकसित करने में मदद करती है।

मुख्य अवधारणाएँ-

शोध के भेद- उद्देश्य, कला और प्रयोग

उद्देश्य- सिद्धांत निर्माण, व्यावहारिक अनुप्रयोग।

काव्य रूप/साहित्यिक/काव्यनुसंधान

शास्त्ररूप/शास्त्रानुसंधान

पुराण या इतिहास रूप/ऐतिहासिक

दर्शनपरक/दार्शनिक/मीमांसा

भाषाशास्त्री/भाषावैज्ञानिक/ध्वनिविज्ञान साहित्यिक

शास्त्रीय अनुसंधान - साहित्य शास्त्रीय- वैचारिक 1. परिस्थितिगत 2. दार्शनिक

काव्यशास्त्री- भारतीय- रस, अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्य

पाश्चात्य- प्लेटो, अरस्तू वैज्ञानिक- ध्वनि, शब्द, पद, वाक्य, अर्थ, लिपि, शैली ।

शोध संबंधित साहित्य सामग्री संग्रह- प्रकाशित साहित्य, हस्तलिखित, शिष्ट-गद्य, पद्य लोक साहित्य-गद्य एवं पद्य, मौलिक ग्रंथ-गद्य एवं पद्य आदि।

शोध के विविध क्षेत्र- विशिष्ट कालखंड का अध्ययन- परंपरा, परिस्थिति और प्रकृति साहित्यिक/रचनाकार का अध्ययन- साहित्यकार का जीवन परिचय, व्यक्तित्व, कर्तृत्व, तत्कालीन परिस्थित का प्रभाव अंतरंग-बहिरंग परीक्षण, देशी-विदेशी भाषा मतवाद का प्रयोग।

विशिष्ट साहित्य विधा- महाकाव्य, नाटक, एकांकी, उपन्यास, कहानी, निबंध।

विविध साहित्य संप्रदाय- उद्भव, विकास, उद्भव के कारण, प्रभाव, प्रवर्तक, समर्थक, विशेषता परिस्थितियों का प्रभाव लेखक कवि। रचना आदि।

शोध विधि- सूत्र, पहेलियां, व्युत्पत्ति, कथा एवं आख्यान (उपदेशात्मक आख्यान, कार्यकारणता के प्रतिपादन के लिए आख्यान, व्यङ्ग्य कथन के लिए आख्यान, अर्थवाद के प्रतिपादन हेतु आख्यान) दृष्टांत विधि समन्वय विधि, आत्मोक्ति विधि, प्रयोजन विधि, प्रतिगमन विधि, व्याख्यात्मक विधि, संवाद विधि। आमतौर पर ऐसे विषय का चयन किया जाता है, जिस पर पूर्व में अधिक अध्ययन न किया गया हो अथवा ऐसी समस्या का चुनाव करें जिस पर पूर्व में अध्ययन तो हुआ हो परन्तु उस विषय में शोध का उद्देश्य भिन्न हो अथवा समस्या का स्वरूप परिवर्तित हो।

शोध प्रबन्ध प्रस्ताव / डिज़र्टेशन कार्य कब प्रारम्भ किया जाएगा (When Dissertation/Dissertation will begin)

- अपनी रुचि के शोध विषय (Research Topic) का चयन करें।
- अपने शैक्षिक फैसिलिटेटर से मार्गदर्शन प्राप्त करना होगा।
- फैसिलिटेटर से संस्तुति प्राप्त करें।
- अध्ययन करना।(Conducting the Study)
- प्रतिवेदन तैयार करना।
- अपने पर्यवेक्षक से समय-समय पर सलाह एवं मार्गदर्शन प्राप्त करें।

विषय/शीर्षक का चुनाव एवं फैसिलिटेटर की सहमति प्राप्त करना (Selection of Topic and Facilitator's consent)

किसी भी शोध को करने का प्रथम सोपान विषय का चयन होता है। अपनी रुचि के विषय को चुनते समय अपने पाठ्यक्रम की विषयवस्तु को ध्यान में रखें। ताकि आप अपने पाठ्यक्रम से सम्बन्धित विषय का चयन कर सकें। इसके अतिरिक्त विषय की उपयुक्तता, प्रासंगिकता, विषय से संबंधित अध्ययन सामग्री, समय सीमा एवं व्यय आदि बातों का ध्यान रखें। तथ्यों के संग्रहण हेतु स्थान का चयन भी विशेष महत्व रखता है जिससे आपकी समय एवं धन का अपव्यय न हो। आप अपनी सुविधानुसार शीर्षक का चयन कर सकते हैं।

शोध से सम्बन्धित विषय (Topics related to Research)

किसी भी शोध कार्य को करने की प्रथम सीढ़ी विषय चयन की होती है अतः शिक्षार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि अपनी रुचि का विषय चुनते समय अपने पाठ्यक्रम की विषयवस्तु का भी ध्यान रखें ताकि आप अपने पाठ्यक्रम से सम्बन्धित विषय का चयन कर सकें। इसके अतिरिक्त आपको विषय की उपयुक्तता, प्रासंगिकता, विषय की अध्ययन सामग्री, समय सीमा के साथ-साथ शोध कार्य में व्यय होने वाली धनराशि पर भी ध्यान देना चाहिए।

संस्कृत-डिज़र्टेशन के लिए सही विषय चुनना बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह आपके शोध की दिशा, गहराई और आपकी रुचि को निर्धारित करता है। यहां एक प्रभावी और आकर्षक विषय चुनने के लिए चरण और सुझाव दिए गए हैं:

1. अपनी डिज़र्टेशन की सीमा और उद्देश्य को समझें

- **पाठ्यक्रम आवश्यकताएँ:** सुनिश्चित करें कि आपका विषय पाठ्यक्रम या डिज़र्टेशन दिशानिर्देशों के अनुरूप हो। देखें कि क्या कोई विशिष्ट विषय, समय अवधि, या क्षेत्र शामिल है।

- **डिजिटेशन का उद्देश्य:** संस्कृत भाषा और साहित्य, भारतीय ज्ञान-परंपरा, और दर्शनशास्त्र से संबंधित ज्ञान को आगे बढ़ाना और छात्रों को इन क्षेत्रों में विशेषज्ञता हासिल करने में मदद करना। इसके अतिरिक्त, यह प्राचीन ज्ञान को आधुनिक संदर्भ में समझने और उसकी प्रासंगिकता स्थापित करने का भी प्रयास करना है।

2. अपनी रुचियों पर विचार करें

- **व्यक्तिगत जिज्ञासा:** ऐसा विषय चुनें जिसमें आप वास्तव में रुचि रखते हों। एक ऐसा विषय जिसे आप आकर्षक पाते हैं, वह आपको शोध प्रक्रिया के दौरान प्रेरित रखेगा।
- **समसामयिक घटनाओं से जुड़ाव:** ऐसे ऐतिहासिक विषयों का पता लगाएं जो वर्तमान सामाजिक, राजनीतिक, या सांस्कृतिक मुद्दों से जुड़े हों, ताकि संस्कृत की प्रासंगिकता स्पष्ट हो सके।

3. उपलब्ध स्रोतों का पता लगाएँ

- प्राथमिक स्रोत:
- संस्कृत में कई अन्य ग्रंथ, जैसे कि सूत्र साहित्य, स्मृति ग्रंथ, और पुराण, भी उपलब्ध हैं।
- इन स्रोतों के अलावा, संस्कृत में कई अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथ और साहित्य भी उपलब्ध हैं, जैसे कि कालिदास द्वारा रचित नाटक और कविताएँ, और भर्तृहरि द्वारा रचित वाक्यपदीय।
- इन स्रोतों के अध्ययन से संस्कृत भाषा और साहित्य के विकास, भारतीय संस्कृति और इतिहास, और दार्शनिक और आध्यात्मिक विचारों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।
- संस्कृत भाषा के कई महत्वपूर्ण स्रोत उपलब्ध हैं, जिनमें वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, और पाणिनि की अष्टाध्यायी शामिल हैं। इन स्रोतों से न केवल संस्कृत साहित्य, बल्कि भारतीय संस्कृति और इतिहास के बारे में भी महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है।
- माध्यमिक स्रोत: सुनिश्चित करें कि पृष्ठभूमि जानकारी और विश्लेषण के लिए पर्याप्त विद्वतापूर्ण कार्य उपलब्ध हैं।
- स्थानीय संसाधन: स्थानीय पुस्तकालयों, संग्रहालयों और ऐतिहासिक समाजों का उपयोग करें ताकि अपने विषय से संबंधित अनूठी सामग्री प्राप्त की जा सके।

4. विषय के महत्व पर विचार करें

- **मौलिकता:** एक अनूठा दृष्टिकोण अपनाने का प्रयास करें या एक ऐसा विषय चुनें जिसे बहुत अधिक अध्ययन नहीं किया गया है।
- **प्रासंगिकता:** ऐसा विषय चुनें जिसके व्यापक प्रभाव हों या जो महत्वपूर्ण ऐतिहासिक सन्दर्भ से संबंधित हो।
- **प्रभाव:** यह सोचें कि आपकी डिजिटेशन किसी ऐतिहासिक अवधि, घटना, या समुदाय की समझ में कैसे योगदान दे सकती है।

5. शिक्षकों और सहपाठियों से चर्चा करें

- मार्गदर्शन प्राप्त करें: अपने विचारों को शिक्षकों, सलाहकारों, या सहपाठियों के साथ साझा करें ताकि विषय को परिष्कृत किया जा सके।
- सहयोगात्मक इनपुट: सहपाठियों के साथ चर्चा से नए विचार प्राप्त हो सकते हैं या आपके चुने हुए विषय में संभावित चुनौतियों की पहचान हो सकती है।

6. एक ऐसा विषय चुनें जो आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करे

- बहस और विवाद: ऐसे विषयों का चयन करें जो ऐतिहासिक बहसों या विपरीत दृष्टिकोणों को शामिल करते हों (जैसे, क्रांति के कारण या किसी ऐतिहासिक व्यक्तित्व की व्याख्या)।
- अंतर-संबंधित विषय: यह विचार करें कि कैसे विभिन्न विषय, जैसे लिंग, वर्ग, जाति, या प्रौद्योगिकी, ऐतिहासिक ढांचे के भीतर एक-दूसरे से जुड़े हैं।

बी.ए.एस.एल. पंचम सेमेस्टर के शिक्षार्थियों हेतु डिज़र्टेशन के शीर्षक
Title of Research Project for BASL Vth Semester Students

स्थानीय संस्कृत

- स्थानीय साहित्य एवं संस्कृति
- स्थानीय विद्वान एवं शिक्षा (संस्कृत, आयुर्वेद, ज्योतिष, वास्तु, योग, कर्मकांड, और प्राकृतिक चिकित्सा जैसे विषय)
- स्थानीय व्याकरण एवं भाषाविज्ञान (स्थानीय भाषाओं के व्याकरण एवं भाषाविज्ञान के विकास)
- स्थानीय बोलियों एवं उच्चारण (स्थानीय बोलियों में, संस्कृत शब्दों और वाक्यांशों का उपयोग)
- आपके शहर या कस्बे स्थित मंदिरों का विकास उनकी पौराणीकता एवं संस्कृति का अध्ययन।
- अपने क्षेत्र के किसी संस्कृत कवि के कार्यों का विस्तृत परिचय।
- मानसखण्ड एवं केदारखण्ड में स्थित मन्दिर की पौराणिकता एवं साहित्यिक तथा संस्कृति अध्ययन

सामाजिक और सांस्कृतिक संस्कृत

- संस्कृत को संरक्षित करने में लोक-कथाओं और मौखिक परंपराओं की भूमिका।
- एक विशिष्ट ऐतिहासिक अवधि के दौरान संस्कृत सिनेमा या साहित्य का प्रभाव।
- संस्कृत ग्रंथों और परंपराओं में सामाजिक मानदंडों, मूल्यों, और रीति-रिवाजों का उल्लेख
- संस्कृत : भारतीय संस्कृति की पहचान
- संस्कृत साहित्य एवं ग्रंथों में नैतिक मूल्यों और सिद्धांतों का वर्णन

राजनीतिक और आर्थिक संस्कृत

- कौटिल्य (चाणक्य) के ग्रंथ में राज्य व्यवस्था, शासन, न्याय, एवं प्रशासन
- संस्कृत साहित्य में सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था
- संस्कृत साहित्य में नैतिकता एवं न्याय

वैश्विक संबंध

- संस्कृत का आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास में योगदान
- संस्कृत का साहित्यिक एवं दार्शनिक प्रभाव
- संस्कृत का आधुनिक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास में योगदान
- संस्कृत भाषा एवं साहित्य के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों का विकास
- भारतीय संस्कृति के योग और आयुर्वेद : वैश्विक सन्दर्भ

अन्य विषय

- संस्कृत साहित्य में ज्योतिष विषयक तत्व
- वेद में योग का स्वरूप
- संस्कृत रूपकों में नाट्यशास्त्रीय तत्व
- संस्कृत और विज्ञान
- भारतीय सौन्दर्यशास्त्र
- भारतीय गणित
- भारतीय रंगमंच के प्रकार
- आयुर्वेद एवं स्वास्थ्य

डिजर्टेशन प्रस्ताव (Research Dissertation Proposal)

आपका प्रबन्ध प्रस्ताव 8-10 पन्नों का होना चाहिये। यह प्रत्ययात्मक रूपरेखा (Conceptual framework) का होना चाहिये। जो समस्या की प्रकृति को दर्शाते हुये होना चाहिये। जिसमें समस्या का चयन उद्देश्य, उपकल्पना, समग्र एवं विनिर्देशन का विवरण होना चाहिए। आंकड़ा-संग्रह की विधियाँ, सारणीयन एवं अध्यायीकरण को सम्मिलित किया जाना चाहिये। समाज वैज्ञानिक होने के नाते आप से अपेक्षा की जाती है कि आप सामाजिक अनुसंधान की पद्धतियों का प्रयोग करते हुये नये ज्ञान की खोज एवं पुराने ज्ञान के सत्यापन का मार्ग प्रशस्त करेंगे।

डिजर्टेशन प्रस्ताव लिखने हेतु प्रारूप (Proposal format to write dissertations)

- **शीर्षक का चुनाव (Selection of Topic)** - सर्वप्रथम डिजर्टेशन प्रस्ताव बनाने हेतु एक शोध शीर्षक का चुनाव करना चाहिए
- **परिकल्पना का निर्माण Formation of Hypothesis** – शोध डिजर्टेशन हेतु समस्या के आधार पर परिकल्पना / प्रकल्पना का निर्माण करना चाहिए। जैसे : "भारत में स्थानीय देवताओं की पूजा प्रथाओं ने पवित्र स्थलों और पर्यावरण संरक्षण के नियमों की स्थापना करके ऐतिहासिक रूप से जंगलों, जल स्रोतों और जैव विविधता के संरक्षण में योगदान दिया है।"
- **अध्ययन की उपयुक्तता** –अध्ययन का शीर्षक क्यों चुना गया तथा इसकी उपयोगिता क्या है के बारे में स्पष्ट ब्यौरा प्रस्तुत करना चाहिए।
- **अध्ययन के उद्देश्य Objectives of the Study** - अध्ययन के उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से लिखा जाना चाहिए। कि उक्त अध्ययन को किये जाने के पीछे आपका उद्देश्य क्या है तथा आप इस अध्ययन को किन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु करना चाहते हैं।
- **अध्ययन हेतु प्रयोग प्रविधि Methodology for Study** - प्रस्तुत शोध अध्ययन में कौन-कौन सी शोध प्रविधियों का प्रयोग करेंगे। यहाँ पर आपको उन प्रयोग की जाने वाली विधियों का स्पष्ट एवं विस्तार से वर्णन करना होगा।
- **शोध अभिकल्पना Research Design** – शोध प्रविधि में कौन सी शोध प्ररचना का प्रयोग करेंगे। जो आपके शोध कार्य की प्रकृति एवं उद्देश्यों को फलीभूत करेंगे उसके बारे में चर्चा करना चाहिए एवं परिभाषा देनी चाहिए।
- **तथ्य एकत्रित करने की तकनीक Techniques of Data Collection** - शोध अध्ययन में तथ्य एकत्रित करने हेतु दो विधियों का प्रयोग करते हैं।
- **प्राथमिक तथ्य एकत्रित करने की विधि Primary methods of data collection** - प्राथमिक तथ्य एकत्रित करने हेतु कई विधियों का प्रयोग करते हैं। जिनमें कुछ अग्रलिखित है -
 1. अवलोकन
 2. संग्रहालय
 3. अभिलेखागार
 4. प्रश्नावली
 5. अनुसूची
 6. साक्षात्कार
 7. वैयक्तिक अध्ययन

द्वितीयक तथ्य एकत्रित करने की विधि

Method's of Secondary data collection: द्वितीयक तथ्य वे तथ्य होते हैं जो विभिन्न किताबों, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों इत्यादि के माध्यम से एकत्रित किये जाते हैं इनका स्पष्ट निरूपण होना चाहिए।

- **सारणीकरण, तथ्य विश्लेषण व्याख्या एवं प्रतिवेदन**
Tabulation, interpretation and Report Writing - शोध प्रबन्ध प्रस्ताव में स्पष्ट रूप से वर्णन करना चाहिए कि शोध अध्ययन में किस प्रकार की सारणी का प्रयोग करेंगे तथ्यों का कैसे विश्लेषण करेंगे उनकी व्याख्या कैसे करेंगे तथा उनका प्रतिवेदन करेंगे।
- **शोध अध्ययन का अध्यायीकरण**

Chapterisation of research Study - इस शीर्षक के अन्तर्गत शोध प्रबन्ध में कौन-कौन से अध्याय होंगे तथा उन अध्यायों में कौन-कौन से तथ्य होंगे का वर्णन करना चाहिए।

इस प्रकार उपरोक्त शीर्षकों के अन्तर्गत शोध प्रबन्ध प्रस्ताव तैयार कर पर्यवेक्षक को प्रस्तुत करना चाहिए तथा पर्यवेक्षक के अनुमोदन के पश्चात अपना शोध कार्य शुरू करना चाहिए।

शोध प्रबन्ध हेतु प्रारूप Outline of Research Project

शोध प्रबन्ध लिखने के लिए सबसे पहले आवश्यक होता है कि अध्यायीकरण के अनुसार प्रतिवेदन किया जाए। इस प्रकार शोध प्रबन्ध तैयार करने हेतु अग्रलिखित शीर्षक दिये जा रहे हैं-

प्रस्तावना Introduction - इसमें शोध अध्ययन शीर्षक से सम्बन्धित तथ्यों को विस्तृत रूप से लिखना चाहिए तथा जो साहित्य जहां से लिये गये हैं उनका भी सन्दर्भ सूची में वर्णन करना चाहिए।

शोध अध्ययन की उपयुक्तता व उद्देश्य Objectives and relevance of research study - इसमें शोध अध्ययन की उपयुक्तता तथा उद्देश्यों का स्पष्ट रूप से वर्णन करना चाहिए।

साहित्य का पुनरावलोकन Review of literature - शोध अध्ययन का प्रतिवेदन करने में साहित्य पुनरावलोकन का महत्वपूर्ण स्थान है अतः शोध अध्ययन प्रतिवेदन में पूर्व में हुए अध्ययनों का वर्णन सांख्यिकीय तथ्यों के साथ करना चाहिए।

ऐतिहासिक स्रोतों की प्रामाणिकता, सत्यापन, तिथिक्रम, वर्तमान संदर्भ Authenticity, Verification, Chronology, and Current Context of Historical Sources: संस्कृत का अध्ययन करते समय, यह आवश्यक है कि हम स्रोतों का मूल्यांकन विभिन्न स्तरों पर करें ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे शोध के लिए विश्वसनीय और सटीक आधार प्रदान करते हैं। चार मुख्य पहलू जिन पर ध्यान देना आवश्यक है, वे हैं: प्रामाणिकता, सत्यापन, कालक्रम, और उनका वर्तमान संदर्भ। प्रामाणिकता का अर्थ है यह निर्धारित करना कि कोई ऐतिहासिक स्रोत वास्तविक है और नकली, बदला हुआ, या गलत तरीके से प्रस्तुत नहीं किया गया है। सत्यापन का मतलब स्रोत की सामग्री की सटीकता, विश्वसनीयता, और प्रामाणिकता का आकलन करना है। यह संस्कृतकारों को तथ्यों और पूर्वाग्रहों, अतिशयोक्ति, या गलतियों के बीच अंतर करने में मदद करता है। यह सुनिश्चित करता है कि व्याख्याएँ साक्ष्यों पर आधारित हैं, न कि केवल धारणाओं पर। सत्यापन के तरीके हैं:

पारस्परिक संदर्भ (Cross-Referencing): स्रोत को अन्य समकालीन स्रोतों से तुलना करें ताकि सुसंगतता सुनिश्चित की जा सके; लेखक का उद्देश्य (Authorial Intent): यह समझें कि लेखक का उद्देश्य और संभावित पूर्वाग्रह (जैसे, प्रचार, व्यक्तिगत उद्देश्य) क्या हो सकता है; तथ्य-जांच (Fact-Checking): स्रोत में किए गए दावों की पुष्टि स्थापित ऐतिहासिक तथ्यों या घटनाओं से करें;

शोध प्रविधि Research method - शोध अध्ययन प्रतिवेदन में विस्तृत रूप से शोध प्रविधि का वर्णन करना चाहिए। जिसमें शोध प्ररचना शोध निदर्शन तथा तथ्यों के एकत्रीकरण के बारे में भी वर्णन करना चाहिए।

अभिलेखीय अनुसंधान:

- शिक्षार्थियों को स्थानीय अभिलेखागार, पुस्तकालयों, और संग्रहालयों में ऐतिहासिक रिकॉर्ड और व्यक्तिगत पत्राचार का पता लगाना चाहिए।
- प्राथमिक स्रोतों के विश्लेषण और व्याख्या में शिक्षार्थियों को प्रशिक्षित होने के साथ ही, उनके संदर्भ, उद्देश्य, और सीमाओं को समझना चाहिए।

मौखिक संस्कृत:

- शिक्षार्थियों को मौखिक साक्षात्कार तकनीकों में प्रशिक्षित होना चाहिए, जिसमें प्रश्न तैयार करना, रिकॉर्डिंग करना, और लिप्यंतरण शामिल है।
- हाशिए पर पड़े या अलिखित समूहों के दृष्टिकोणों को पकड़ने में मौखिक संस्कृत के महत्व पर जोर देना चाहिए।

क्षेत्र-कार्य और मानचित्रण:

- शिक्षार्थियों को स्थानीय स्थलों, पड़ोस, या सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण स्थानों की यात्रा के लिए तैयार होना चाहिए।
- अपनी टिप्पणियों को क्षेत्र नोट्स, रेखाचित्र, तस्वीरें, और GIS मानचित्रण उपकरणों के माध्यम से प्रलेखित करने का प्रयास करना चाहिए।

डिजिटल उपकरण और कहानी कहना:

- छात्रों को डिजिटल प्लेटफॉर्म जैसे Story Map, ArcGIS, Canva, या वीडियो संपादन सॉफ्टवेयर का उपयोग करना सीखना चाहिए।
- डिजिटल अभिलेखागार, पॉडकास्ट, या ऑनलाइन प्रदर्शनियों जैसे रचनात्मक आउटपुट को प्रोत्साहित करना चाहिए।

सामुदायिक सहयोग:

- स्थानीय ऐतिहासिक संगठनों, सांस्कृतिक समूहों, या निवासियों के साथ साझेदारी की सुविधा देना।
- सामुदायिक-आधारित अनुसंधान के नैतिक पहलुओं को उजागर करना, यह सुनिश्चित करते हुए कि सम्मान और लाभ पारस्परिक हो।

उत्तरदाताओं का पृष्ठभूमि Profile of respondents - इस अध्याय में उत्तरदाताओं से सम्बन्धित उन सभी तथ्यों का वर्णन करना चाहिए जो उनकी आर्थिक, सामाजिक स्थिति से सम्बन्धित हो।

निष्कर्ष Conclusion - इसके अन्तर्गत शोध अध्ययन में महत्वपूर्ण तथ्यों को दिया जाना चाहिए जिससे शोध अध्ययन की एक संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की जानी चाहिये।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची (Bibliography References) -

शोध प्रबन्ध में जो भी तथ्य द्वितीयक स्रोतों से लिये जाते हैं उनका विवरण सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में देना चाहिए।

शिक्षार्थियों की सहायता हेतु यहाँ शोध से सम्बन्धित विभिन्न चरणों की व्याख्या की जा रही है।

आइए, एक ऐतिहासिक डिज़रेशनकार्य के विभिन्न चरणों को समझें:

1. विषय का चयन:

- रुचि: ऐसे विषय का चयन करें जिसमें आपकी वास्तविक रुचि हो। इससे आपको पूरे शोध प्रक्रिया में प्रेरित रहने में मदद मिलेगी।
- क्षेत्र: सुनिश्चित करें कि विषय दिए गए समय सीमा और संसाधनों के भीतर प्रबंधनीय है। बहुत व्यापक या संकीर्ण विषयों से बचें।
- स्रोत उपलब्धता: अपने विषय से संबंधित प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों की उपलब्धता पर विचार करें।
- शोध प्रश्न: एक स्पष्ट और केंद्रित शोध प्रश्न तैयार करें जिसका उत्तर आपकी डिज़रेशन देगी।

2. साहित्य समीक्षा:

- पृष्ठभूमि अनुसंधान: सामान्य पाठ्य और संदर्भ सामग्री के माध्यम से अपने विषय की बुनियादी समझ प्राप्त करें।
- मुख्य स्रोतों की पहचान: पुस्तकों, लेखों, दस्तावेजों और ऑनलाइन डेटाबेस जैसे प्रासंगिक प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का पता लगाएं।
- महत्वपूर्ण विश्लेषण: विश्वसनीयता, प्रासंगिकता और पूर्वाग्रह के लिए स्रोतों का मूल्यांकन करें।
- सूचना का संश्लेषण: विषय की एक सुसंगत समझ बनाने के लिए विभिन्न स्रोतों से जानकारी को व्यवस्थित और व्याख्या करें।

3. परिकल्पना का निर्माण (वैकल्पिक):

- शिक्षित अनुमान: आपके द्वारा अध्ययन किए जा रहे ऐतिहासिक घटना या घटना के बारे में एक अस्थायी व्याख्या या भविष्यवाणी विकसित करें।
- परीक्षण योग्य: सुनिश्चित करें कि आपकी परिकल्पना परीक्षण योग्य है और साक्ष्य द्वारा समर्थित या खंडित की जा सकती है।

4. शोध पद्धति:

- ऐतिहासिक विधि: स्रोत आलोचना, कालक्रम और संदर्भ विश्लेषण जैसी तकनीकों का उपयोग करें।
- डेटा संग्रह: प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों से प्रासंगिक डेटा एकत्र करें।
- डेटा विश्लेषण: अर्थपूर्ण निष्कर्ष निकालने के लिए एकत्रित डेटा की व्याख्या और विश्लेषण करें।

5. लेखन प्रक्रिया:

- सुनिश्चित स्वरूप: अपने पेपर को एक स्पष्ट परिचय, मुख्य भाग और निष्कर्ष के साथ संरचित करें।
- तर्क: एक मजबूत थीसिस स्टेटमेंट विकसित करें और इसे अपने शोध के साक्ष्य के साथ समर्थन दें।
- उद्धरण: स्रोतों को श्रेय देने के लिए उचित उद्धरण शैलियों (जैसे APA, MLA, शिकागो) का उपयोग करें (वैकल्पिक)।

- स्पष्टता और सुसंगतता: स्पष्ट और संक्षिप्त लिखें, विचारों को सुचारू रूप से जोड़ने के लिए संक्रमण का उपयोग करें।

6. निष्कर्ष:

- निष्कर्षों का सारांश: अपनी थीसिस को दोहराएं और अपने तर्क के मुख्य बिंदुओं का सारांश दें।
- परिणामों की व्याख्या: अपने निष्कर्षों के महत्व की व्याख्या करें और बताएं कि वे ऐतिहासिक विषय की समझ में कैसे योगदान करते हैं।
- सीमाएँ और भविष्य के अनुसंधान: अपने शोध की किसी भी सीमा को स्वीकार करें और आगे की जांच के लिए संभावित क्षेत्रों का सुझाव दें।

अतिरिक्त बिंदु:

- समय प्रबंधन: अपने शोध और लेखन को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए एक यथार्थवादी समयरेखा बनाएं।
- नैतिक विचार: बौद्धिक संपदा अधिकारों का सम्मान करें और चोरी से बचें।
- पीयर रिव्यू: अपने काम को बेहतर बनाने के लिए साथियों या सलाहकारों से प्रतिक्रिया लें।
- संशोधन और संपादन: स्पष्टता, सुसंगतता और सटीकता के लिए अपने लेखन को परिष्कृत करते रहें।

इन चरणों का पालन करके और विवरण पर ध्यान देकर, आप एक उच्च-गुणवत्ता वाली ऐतिहासिक शोध डिजिटेशन तैयार कर सकते हैं।



शोध प्रबंध का शीर्षक

(Title of the research Dissertation)

(चयनित अध्ययन क्षेत्र का नाम)

(Name of the selected study area)

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के

BASL (N)-D-331 पंचम सेमेस्टर की

आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत

(Submitted for partial fulfillment of BASL (N)-D-331 fifth semester of Uttarakhand Open University)



शोध प्रबन्ध

(Research Dissertation)

वर्ष/सत्र

(Year/Session)

शोध पर्यवेक्षक (Research Supervisor)

नाम (Name)-

पदनाम, विभाग- Designation, Department)

विश्वविद्यालय/महाविद्यालय का नाम एवं पता-

(Name and address of University/College)

शोधार्थी (Researcher)

नाम (Name)-

नामांकनसंख्या- (EnrolmentNo)-

अध्ययन केन्द्र का नाम एवं पता

प्रारूप-1

(Name and address of the study centre)

(हिंदी और अंग्रेजी दोनों माध्यमों के शिक्षार्थियों लिए प्रारूप) (Format for both Hindi and English medium learners)

Performa for Submission of BASL-23 Research Dissertation Proposal for Approval from Research Supervisor at Study Centre

(अध्ययन केंद्र में शोध पर्यवेक्षक से अनुमोदन के लिए BASL-23 शोध परियोजना प्रस्ताव प्रस्तुत करने का प्रारूप)

नामांकन संख्या: (Enrolment No):.....

परियोजना का शीर्षक (Title of the Project):.....

जमा करने की तिथि (Date of Submission):

अध्ययन केंद्र का नाम (Name of the Study Centre):.....

क्षेत्रीय केंद्र का नाम (Name of the Regional Centre):.....

पर्यवेक्षक का नाम (Name of the Supervisor):.....

हस्ताक्षर (Signature).....

शोध पर्यवेक्षक का नाम एवं पता:

(Name & Address of the Research Supervisor)

फोन एवं ईमेल आईडी (Phone No. & Mail Id):

शिक्षार्थी का नाम व पता (Name & Address of the Student)

फोन एवं ईमेल आईडी (Phone No. & Mail Id) :

स्वीकृत/अस्वीकृत (टिप्पणियों के साथ) (Approved /not approved (with remarks).....

दिनांक (Date).....

स्थान (Place):.....

घोषणापत्र

मैं एतद्वारा घोषणा करता हूँ कि इस शोध प्रबंध का शीर्षक

.....(शीर्षक को बड़े अक्षरों में लिखें) उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय (यूओयू) को बीएएल की आंशिक पूर्ति के लिए मेरे द्वारा प्रस्तुत यह पांडुलिपि मेरा अपना मौलिक कार्य है और इसे पहले किसी अन्य संस्थान को अध्ययन के किसी अन्य कार्यक्रम की आवश्यकता की पूर्ति के लिए प्रस्तुत नहीं किया गया है। मैं यह भी घोषणा करता/करती हूँ कि इस पांडुलिपि का कोई भी अध्याय पूर्णतः या आंशिक रूप से मेरे या अन्य द्वारा किए गए किसी पूर्व कार्य से नहीं लिया गया है और न ही इस रिपोर्ट में शामिल किया गया है।

दिनांक :

स्थान :

हस्ताक्षर :

नाम:

पता:

.....

अंग्रेजी माध्यम के शिक्षार्थियों लिए प्रारूप (Format for English Medium Learners)

Declaration Certificate

I hereby declare that the dissertation entitled.....

.....(Write the title in Block Letters) Submitted by me for partial fulfillment of the BASL to Uttarakhand Open University (UOU) is my own original work and has not been submitted earlier to any other institution for the fulfillment of the requirement for any other programme of study. I also declare that no chapter of this manuscript in whole or in part is lifted and incorporated in this report from any earlier work done by me or others.

Date :

Place :

Signature :

Enrolment no.....

Name :

Address:

.....

प्रमाण पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि श्री/सुश्री

.....उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय (यूओयू) हल्द्वानी से बी.ए.एस.एल.पंचम सेमेस्टर के छात्र BASL-23 पाठ्यक्रम के लिए अपने प्रोजेक्ट कार्य हेतु मेरे पर्यवेक्षण और मार्गदर्शन में काम कर रहे थे। इनका प्रोजेक्ट कार्य जिसका शीर्षक.....

.....है, इनके द्वारा प्रस्तुत किया गया कार्य वास्तविक और मौलिक कार्य है।

हस्ताक्षर:

नाम:

पता:

फोन नंबर और मेल आईडी

(शोध पर्यवेक्षक द्वारा भरा जायेगा)

दिनांक:.....

स्थान:.....

अंग्रेजी माध्यम के शिक्षार्थियों लिए प्रारूप (Format for English Medium Learners)

Certificate issued by the supervisor

This is to certified that Mr./Ms. Student of BASL Vth Semester from Uttarakhand Open University (UOU) Haldwani was working under my supervision and guidance for his/her Project Work for the course BASO-23.His/Her Project Workentitled.....

.....Which he/she is submitting, is his/her genuine and original work.

Signature:.....

Name:.....

Address:.....

Phone no. & mail id.....

(To be Filled by Supervisor)

Date:.....

Place:.....